ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

इतिहास

ईसीएल का रानीगंज कोयला क्षेत्र देश में कोयला खनन की जन्म स्थली है। 1774 में देश में पहला खनन संचालन इसी कोयला क्षेत्र में सुमनेर एण्ड हिटली द्वारा प्रारम्भ किया गया। 1820 ई.में मेसर्स एलेक्जेण्डर एण्ड कंपनी नामक पहली कोयला कंपनी स्थापित हुई। 1835 ई. में प्रथम भारतीय इंटरप्राइज मेसर्स कार एण्ड टैगोर कंपनी बनी। 1843 ई. में पहला संयुक्त स्टॉक कोल कंपनी मेसर्स बंगाल कोल कंपनी गठित हुई। उसी समय से रानीगंज कोयला क्षेत्र में कई छोटे मालिकों द्वारा भूमिगत कोयला खनन का कार्य चलता आ रहा था। 19 वीं एवं 20 वीं सदी की अधिकांश अवधि में रानीगंज कोयला क्षेत्र भारत की मुख्य कोयला उत्पादन स्थली रही।

राष्ट्रीकरण एवं उसके पश्चात

1973 ई. में सभी गैर कोकिंग कोल खदानों का राष्ट्रीयकरण हुआ एवं इसे कोल माइन्स ऑथरिटी लिमिटेड के पूर्वी डिविजन के अंतर्गत रखा गया। 1975 ई. में कोल इंडिया लिमिटेड की एक सहायक कंपनी के रुप में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की स्थापना हुई एवं रानीगंज कोयला क्षेत्र की सभी निजी कोयला खदानों को इसके अंतर्गत लाया गया।

भौगोलिक स्थिति एवं क्षेत्रफल

ईसीएल का खनन लीज होल्ड क्षेत्रफल 753.75 वर्ग किलोमीटर एवं सतह अधिकार क्षेत्रफल 237.18 वर्ग किलोमीटर है। यह दो राज्यों - पश्चिम बंगाल एवं झारखण्ड में अवस्थित है। रानीगंज कोयला क्षेत्र का क्षेत्रफल 1530 वर्ग किलोमीटर है जो पश्चिम बंगाल में बर्द्धमान, बीरभूम, बाँकुड़ा एवं पुरुलिया जिलों में फैला हुआ है। झारखण्ड के देवघर जिले में साहिरजुड़ी कोयला क्षेत्र, जिसका क्षेत्रफल 10 वर्ग किलोमीटर है, वह ईसीएल के तहत एस पी माईन्स क्षेत्र के रुप में कार्यरत है। झारखण्ड के गोड्डा जिला में स्थित हूरा कोयला क्षेत्र भी ईसीएल के तहत है जिसका क्षेत्रफल 80 वर्ग किलोमीटर है। ईसीएल की सबसे बड़ी खुली खान राजमहल का संचालन यहीं होता है। रानीगंज कोयला क्षेत्र का ह्रदय स्थल अजय नदी के उत्तर में स्थित है जबकि मेजिया एवं परबेलिया दामोदर नदी के दक्षिण में स्थित है। धनबाद जिले में स्थित मुगमा क्षेत्र बराकर नदी के पश्चिम में स्थित है। कोल सीमों का निर्माण मुख्य रुप से दो क्रमों में ईसीएल में रानीगंज मीजर्स एवं बराकर मीजर्स के रुप में हुआ है। रानीगंज मीजर्स के अंतर्गत रानीगंज कोयला क्षेत्र का संपूर्ण भाग - पाण्डवेश्वर, काजोड़ा, झांझरा, बांकोला, केन्दा, सोनपुर, कुनुस्तोड़िया, सतग्राम, श्रीपुर, सोदपुर , एवं सलानपुर क्षेत्र का कुछ भाग है। बराकर मीजर्स के तहत दो क्षेत्र मुगमा, एस पी माइन्स तथा राजमहल क्षेत्र मुख्य रुप से बराकर मीजर्स एवं तालचेर सीरीज से जुड़े हैं।

खदानें एवं जनशक्ति

वर्तमान में ईसीएल के पास 105 की संख्या में खदानें संचालन में हैं, जिसमें से 81 भूमिगत खदानें एवं 24 खुली खदानें हैं। दिनांक 01.04.2011 को ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की जनशक्ति 81,128 है, जिसमें महिला कर्मचारियों की संख्या-7333(9.04%) है।

कोयला भंडार

01.04.2010 को ईसीएल कमाम्ड क्षेत्र में 600 मीटर की गहराई तक कुल कोयला भंडार 47.08 बिलियन टन है, जिसमें से 29.72 बिलियन टन पश्चिम बंगाल राज्य में एवं 17.36 बिलियन टन झारखण्ड राज्य में स्थित है। कुल प्रमाणित भंडार पश्चिम बंगाल में 11.63 बिलियन टन एवं झारखण्ड राज्य में 4.19 बिलियन टन है।

उत्कृष्ट गुणवत्ता का गैर कोकिंग कोल

रानीगंज मीजर्स का कोयला, विशिष्ट गुण के कारण देश भर में उत्कृष्ट प्रकार का गैर कोकिंग कोल भंडार है, जिसमें औसत राख की मात्रा 20 प्रतिशत से भी कम है। इस कोयले का विशिष्ट गुण उच्च वाष्पशीलता, लम्बी लौ, त्वरित ज्वलनशीलता एवं उच्च ताप मूल्य है। सभी तीव्र ताप वाले उद्योग जैसे-कांच, सिरामिक, उर्वरक, रीफ्रैक्ट्रीज, फोरजिंग इत्यादि रानीगंज कोयले का उपयोग करता हैं। देश से निर्यात होने वाले कोयले का अधिकांश भाग रानीगंज कोयला क्षेत्र का ही है। रानीगंज कोयला जोकि अपने उच्च गुणवत्ता, अल्पराखधारिता एवं एमओईएफ के तहत इसकी मांग के कारण विद्युत संयंत्रो के लिए आयातित गुणवत्ता का विकल्प है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण रानीगंज कोयले की पूरे देश में उच्च मांग है।

बराकर मीजर्स का कोयला कम नमी वाला, उच्च कार्बनधारिता, अल्प सल्फर वाला है, जो आधुनिक विद्युत संयंत्रों एवं लघु उद्योगों के लिए उपयुक्त है।

ईसीएल ने 2008-09 के दौरान ई-ऑक्सन से अधिसूचित मूल्य की तुलना में रुपया 153.67 करोड़, 2009-10 में रु. 112.25 करोड़ एवं 2010-11 में रु. 131.57 करोड़ का उच्च लाभ प्राप्त किया।

हमारी उपलब्धि

राष्ट्रीयकरण के समय ईसीएल में कुल कोयला उत्पादन करीब 21 मिलियन टन था, जिसमें से भूमिगत खदानों से 19 मिलियन टन एवं मैनुअल क्वारी से शेष उत्पादन था। राष्ट्रीयकरण के तुरन्त बाद अल्प अवधि एवं लम्बी अवधि के निवेश के द्वारा उत्पादन स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया गया, फलस्वरुप उत्पादन में बढ़ोतरी हुई। यद्यपि कुछ खदानों/यूनिटों में कार्यरत सीम में कोयला भंडार खत्म हो जाने, खान सुरक्षा के साथ-साथ अलाभकारी स्थिति के आधार पर संचालन कार्य रोक दिया गया एवं केभिंग के साथ डीपीलरिंग के लिए भूमि अधिग्रहण की समस्या के साथ-साथ लोडरों की संख्या धीरे-धीरे कम होते जाने के कारण भूमिगत खदानों से उत्पादन कायम नहीं रह सका एवं भूमिगत उत्पादन व्यापक रुप से घटकर 2010-11 के दौरान 7.37 मिलियन टन रह गया।

भूमिगत उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी के लिए एक रोडमैप तैयार किया गया है, जिसके तहत अधिकांश खदानों में लोडिंग संचालन में एसडीएल/एलएचडी को शामिल करके मैनुअल खदानों का यांत्रिकरण शामिल है, जहाँ पर यह व्यवहारिक है। वर्तमान समय में कंपनी में 161 की संख्या में एसडीएल एवं 38 की संख्या में एलएचडी तैनात हैं।

वर्ष 2010-11 में 113 की संख्या में एसडीएल के लिए खरीद कार्रवाई की गई है, जिसमें से 70 रिप्लेसमेंट के बदले हैं एवं 43 अतिरिक्त हैं।

उपरोक्त के अलावा भूमिगत उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए कुछ खदानों की जोखिम/लाभ के आधार पर शटल कार के साथ कंटिनुअस माइनर की तैनाती द्वारा व्यापक उत्पादन तकनीक चालू करने के लिए चिन्हित की गई है। प्रारम्भ में सितम्बर 2007 में जोखिम/लाभ आधार पर मेसर्स ज्वाय माइनिंग मशीनरी लिमिटेड के सहयोग से झांझरा परियोजना में कंटिनुअस माइनर पैकेज चालू किया गया, जो सफलता पूर्वक कार्यरत है। एक और कंटिनुअस माइनर बंकोला क्षेत्र के सारपी भूमिगत खदान में चालू किया गया तथा अगस्त 2010 के अंत से उत्पादन प्रारम्भ हो गया है।

झांझरा के लिए दूसरे कंटिनुअस माइनर हेतु निविदा की मंजूरी ईसीएल बोर्ड द्वारा मिल चुकी है तथा अद्यतन लागत आकलन (यूसीई) को स्वीकृति हेतु सीआईएल इम्पावर्ड उप समिति के पास भेज दिया गया।

झांझरा में पीएसएलडब्ल्यू के लिए निविदा फायनल हो चुका है एवं एलओए जारी कर दिया गया है।

ईसीएल के समक्ष चुनौतियां

0	वन विभाग की स्वीकृति	-	वन विभाग की स्वीकृति का कार्य 5 वर्षों से लम्बित है।
0	पुनर्वास एवं बन्दोवस्ती नीति	-	परियोजना प्रभावित लोगों की बढ़ती हूई अपेक्षाओं को पूरा करना।
0	वास्तविक रुप में उत्पादन लागत को घटाना।		
0	भूमिगत उत्पादन में बढ़ोतरी	-	आधुनिक तकनीक को शामिल करना।
0	सुरक्षित खनन	-	दुर्घटना दर में कमी लाना।
		-	चरणबद्ध तरीके से यांत्रिक लोडिंग द्वारा मैनुअल लोडिंग को हटाना।
0	अव्यवहारिक खदानों में खनन गतिविधिओं को रोकना।		

की गई कार्रवाई

- 0 नई खदानों को खोलना
- 0 वर्तमान खदानों से उत्पादन में बढ़ोतरी करना।
- 0 तकनीक उन्नयन।
- 0 भूमिगत खदानों का यांत्रिकीकरण।
- 0 भूमिगत घाटे की भरपाई के लिए उच्च ग्रेड के कोयले हेतु संशोधित विक्रय वसूली।

चुनौती को स्वीकार करना

0 उपभोक्ताओं से कोयले की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड खुली खान एवं भूमिगत दोनों से कोयले का उत्पादन 2010-11 में 30.81 मिलियन टन के वर्तमान स्तर से 2011-12 में 33.00 मिलियन टन तक लाना चाहता है। वर्ष 2010-11 में ईसीएल में 56.54 मिलियन घनमीटर ओबी का निष्कासन किया एवं वर्ष 2011-12 के लिए यह लक्ष्य 61.00 मिलियन घनमीटर है।

0 10 वीं योजना अवधि के दौरान 10 की संख्या में नए पुनर्गठित भूमिगत परियोजनाओं को कार्यान्वयन हेतु लिया गया है तथा वर्तमान भूमिगत उत्पादन में सुधार लाने के लिए 11 वीं योजना अवधि में 7 की संख्या में भूमिगत परियोजनाओं को लिए जाने का प्रस्ताव है। 10 वीं योजना में पहचान किए गए 10 भूमिगत खदानों में से 3 परियोजनाओं में उत्पादन हो रहा है एवं बाकी परियोजनाएं कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में है।

भूमिगत उत्पादन में बढ़ोतरी

- 0 सारपी में 2रा कंटिनुअस माइनर सितम्बर 2010 में चालू हुआ।
- 0 विभिन्न चरणों में मैनुअल लोडिंग हटाकर यांत्रिकृत लोडिंग को चालू करके भूमिगत डिस्ट्रिक्टों का पुनर्गठन।
- 0 113 और एसडीएल की खरीद के लिए निविदा अंतिम चरण में है ताकि मैनुअल लोडिंग से बचा जा सके एवं खान सुरक्षा में सुधार हो।
- 0 झांझरा में पीएसएलडब्ल्यू के लिए एलओआई जारी किया गया।
- 0 विभिन्न भूमिगत खदानों में 6 और कंटिनुअस माइनर की तैनाती की सिद्धांत रुप में ईसीएल बोर्ड ने मंजूरी दे दी है।
- 0 एमडीओ धारणा के तहत उच्च क्षमता भूमिगत खदानों के लिए कुछ संख्या में भूमिगत भंडार जैसे नारायणकुड़ी, धंगाजोड़, पुआपुर, सोनपुर बजारी इत्यादि की पहचान की गई।

Road header

खुली खान उत्पादन में वृद्धि-

(1) 10.5 मिलियन टन से 17 मिलियन टन राजमहल विस्तार के लिए विश्व व्यापी निविदा दो बार जारी की गई, लेकिन फायनल नहीं हो सका, अतः निविदा रद्द कर दी गई। संशोधित परियोजना रिपोर्ट आंशिक वाह्य स्रोत विकल्प के तहत रु. 153.82 करोड़ के पूंजी निवेश के साथ सितम्बर 2009 में कोयला मंत्रालय द्वारा स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। ईसीएल बोर्ड अपनी 05.08.2010 की सम्पन्न बैठक में एमसीएल में हाल ही में सम्पन्न निविदा की तर्ज पर एनआईटी दस्तावेज को पुनः (Recast) जारी करने का सुझाव दिया। तदनुसार राजमहल विस्तार की जरुरतों के तहत कुछ बदलाव के साथ सीएमपीडीआईएल के द्वारा ड्राफ्ट एनआईटी तैयार की गई। दिनांक 15.02.2011 को एनआईटी जारी की गई। बोली की पेशी एवं खुलने की तिथि 21.6.2011 है। दिनांक 17.03.2011 को पूर्व बोली बैठक सम्पन्न हुई एवं भविष्य के 17 बोलीकर्ताओं ने बैठक में भाग लिया।

(2) सिमलौंग खुली खान जहाँ वर्ष 2002 के दौरान संचालन कार्य रोक दिया गया था, उसे पुनः चालू किया गया है, ताकि बचे हुए 0.9 मिलियन टन कोयले का उत्खनन किया जा सके तथा पास के चुपरभिटा खुली खान परियोजना को चालू करने में मदद मिल सके।

(3) वन विभाग की स्वीकृति के पश्चात कोल इंडिया लिमिटेड चुपरभिटा 4 एमटीवाइ एवं हूरा-(सी)- 3 एमटीवाइ के लिए परियोजना रिपोर्ट की मंजूरी देगा। कंपनी वन विभाग की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए तेजी से प्रयास कर रही है।

(4) ईसीएल बोर्ड ने रु.495.09 करोड़ के निवेश के साथ सोनपुर बजारी संयुक्त ओसी 8 एमटीवाइ के परियोजना रिपोर्ट की मंजूरी जनवरी 2008 में दे दिया है। सोनपुर बजारी संयुक्त ओसी के लिए संशोधित परियोजना रिपोर्ट ईसीएल बोर्ड की 242 वीं बैठक में रखी गई है तथा बोर्ड ने इसे मुल्यांकन एवं स्वीकृति हेतु सीआईएल के अधिकार दिए गए उप समिति को अग्रसारित कर दिया।

(5) चित्रा परियोजना के 2.5 मिलियन टन विस्तार हेतु कोल इंडिया बोर्ड ने रु.112.69 करोड़ के निवेश के साथ परियोजना रिपोर्ट की स्वीकृति अगस्त 2007 में दे दिया है। वाह्य स्रोत द्वारा ओबी निष्कासन के प्रस्ताव की स्वीकृति तकनीकी समिति द्वारा दे दी गई है, जिसका अब आकलन समिति द्वारा छानबीन किया जा रहा है।

(6) वर्ष 2007-08 से अब तक कुल 213 सर्वे ऑफ किए गए एचईएमएम के बदले 148 की खरीद की गई तथा 38 के लिए आदेश दिए गए एवं 37 के लिए निविदा जारी की गई।

(7) मोहनपुर विस्तार भाड़े के ओसी पैच (0.6 एमटीवाइ से 1.0 एमटीवाइ) से उत्पादन प्रारम्भ हो चुका है।

(8) सोनपुर बजारी विस्तार के लिए कार्य आदेश जारी किए गए हैं।

(9) विभागीय ओबी निष्कासन में सुधार के लिए सोनपुर बजारी तथा खोट्टाडीह ओसीपी में फेस से सीएचपी तक ठेका परिवहन हेतु कार्य आदेश जारी किए गए हैं।

(10) 16 नए वाह्य स्रोत पैचों को चालू करने के लिए ईसीएल बोर्ड द्वारा सिद्धांत रुप से स्वीकृति प्राप्त कर ली गई है।

पैचों का वाह्य स्त्रोत

वर्ष 2010-11 के दौरान कंपनी ने वाह्य स्त्रोत ओसी पैचों से 5.69 मिलियन टन कोयले का उत्पादन किया। आज की तिथि में कंपनी द्वारा 7 वाह्य स्त्रोत पैचों का संचालन किया जा रहा है। अधिक संख्या में पैचों की पहचान की गई है एवं भविष्य में माधब पुर पीएच-।। ओसी पैच, हंसडीहा पैच-।।, कपासारा ओसी पैच, कालीपहाड़ी-ए ओसी पैच, मल्लिक बस्ती ओसी पैच, डाबर पीएच-।। ओसी पैच, खैराबाद फेज-।।, वेस्ट केंदा ओसी पैच, डमालिया वेस्ट एक्सटेंसन ओसी पैच का विस्तार, ए-2-ए-3 ओसी पैच राजमहल इत्यादि में काम करने का प्रस्ताव है।

प्रेषण में बढोतरी के लिए की गई कार्रवाई

- O राजमहल ग्रुप ऑफ माइन्स से प्रेषण की विभिन्न बाधाओं पर नियन्त्रण के लिए निम्नलिखित कार्रवाई की गई -
- O पीरपैंती साइडिंग को कोयले का परिवहन पुन: बहाल कर दिया गया है।
- O अतिरिक्त रेकों की लोडिंग के लिए राजमहल सीएचपी के पास वार्फ वाल के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।
- O वर्तमान क्रशर के ओभर हॉलिंग का कार्य पूरा हो चुका है तथा पुराने बेल्ट की जगह नए बेल्ट दे दिए गए हैं।
- O सीएचपी के आस-पास असामाजिक गतिविधियों को रोकने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा कर्मियों को लगाया गया है।
- O एसपी माइन्स के लिए सीएचपी के डिजाइन का कार्य सीएमपीडीआईएल द्वारा कर दिया गया है। यद्यपि सीएचपी के चालू होने तक भविष्य के परिवहन निविदा में मोबाइल क्रशर या फीडर ब्रेकर द्वारा क्रशिंग को शामिल किया जायगा। भविष्य के परिवहन निविदाओं में क्रश किए गए कोयले के प्रेषण हेतु मोबाइल क्रशरों की तैनाती की संभावना देखी जा रही है।
- O वाह्य स्त्रोत ठेका पैचों के लिए कार्य आदेशों में साइडिंग तक कोयले का परिवहन शामिल रहेगा।
- O बाइ-डाइरेक्सनल वे ब्रिजों समेत अतिरिक्त रेलवे वे ब्रिजों को चालू करने के लिए भी कार्रवाई की गई है।

सी.एस.आर. गतिविधियाँ

हमें सामुदायिक कल्याण की चिंता है। कोयला क्षेत्रों के 15 किलोमीटर के दायरे में सामान्यत: कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी की गतिविधियाँ चलाई जाती है।

चलायी जा रही बड़ी गतिविधियाँ

- कुआँ/-ट्यूब वेल/- हैंड पम्पों का लगाया जाना एवं जल आपूर्ति की अन्य योजनाएँ।
- ग्रामीण सड़क का निर्माण - (एप्रोच रोड)।
- यात्रियों के लिए विश्राम शेड (बस शेल्टर) का निर्माण।
- ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए वित्तीय सहायता।
- विद्यालय भवन का निर्माण।
- पुस्तकालय भवन का निर्माण।
- जरुरतमंद मेधावी छात्रों एवं खेलकूद में प्रतिभाशाली छात्रों के लिए छात्रवृत्ति।
- इंजीनियरिंग/मेडिकल कोर्स में नामांकन के लिए तैयार करने हेतु पीएपी के बच्चों को कोचिंग।
- गांव में सौर उर्जा की व्यवस्था।
- मोबाइल चिकित्सा भैन तथा चिकित्सा शिविर आयोजित करके गांव में ग्रामीणों के चिकित्सा इलाज की सुविधा।
- प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सहायता उपलब्ध करवाना।
- कोई दूसरी सहायता जिससे समुदाय को व्यापक रुप से लाभ पहुँचता हो।